

स्मृति

- श्रीराम शर्मा

प्रश्न - उत्तर

प्रश्न 1. भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक के मन में किस बात का डर था?

उत्तर: भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक के मन में भाई के हाथ से पिटाई खाने का डर था। लेखक मन-ही-मन सोच रहे थे कि कहीं झरबेरी के बेर तोड़कर खाने की खबर तो भाई साहब तक नहीं पहुँच गई और उसकी वजह से लेखक के मन में बड़े भाई की मार का डर समाया हुआ था।

प्रश्न 2. मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली रास्ते में पढ़ने वाले कुएँ में ढेला क्यों फेंकती थी ?

उत्तर: मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली एक वानर टोली थी। रास्ते में एक सूखा कुआँ था जिसमें एक साँप गिर गया था। बच्चों की टोली उस साँप की क्रोधित फुसकार सुनकर आनंदित होती थी। इसलिए बच्चों की टोली कुएँ में ढेला फेंकती थी।

प्रश्न 3. 'साँप ने फुसकार मारी या नहीं, ढेला उसे लगा या नहीं, यह बात अब तक स्मरण नहीं'- यह कथन लेखक की किस मनोदशा को स्पष्ट करता है?

उत्तर: यह कथन लेखक की घबराहट और उलझनपूर्ण मनोदशा को स्पष्ट करता है। जैसे ही लेखक ने टोपी उतारकर कुएँ में ढेला फेंका, वैसे ही टोपी के नीचे रखी तीनों चिट्ठियाँ चक्कर खाती हुई कुएँ में जा गिरीं। चिट्ठियों को कुएँ में गिरते देखकर लेखक पर बिजली-सी गिर पड़ी। ढेले की चोट से साँप का आहत होना और फुसकारने

की आवाज़ उन्हें सुनाई ही नहीं पड़ी। निराशा और पिटने के भय से उनकी आँखें भर आईं।

प्रश्न 4. किन कारणों से लेखक ने चिट्ठियों को कुएँ से निकालने का निर्णय लिया ?

उत्तर: चिट्ठियाँ लेखक के बड़े भाई ने डाकखाने में डालने के लिए दी थीं। चिट्ठियों को कुएँ से निकालने के निम्नलिखित कारण थे -

- लेखक अपने बड़े भाई से बहुत डरते थे।
- उनमें झूठ बोलने की प्रवृत्ति नहीं थी।
- कुएँ में चिट्ठियाँ गिरने से उन्हें अपनी पिटाई का डर था।
- लेखक को अपने डंडे और स्वयं पर पूरा भरोसा था कि वह साँप को मारकर चिट्ठियाँ बाहर निकाल लेंगे।

प्रश्न 5. साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने क्या-क्या युक्तियाँ अपनाईं ?

उत्तर: साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने कई युक्तियाँ अपनाईं :-

- उसने डंडे से साँप को दबाने का खयाल छोड़ दिया और मुट्ठी भरकर मिट्टी साँप के एक ओर फेंकी।
- साँप के पास पड़ी चिट्ठियों को उठाने के लिए उसने डंडा आगे बढ़ाया, साँप ने सारा विष उस डंडे पर उगल दिया।
- लेखक ने चिट्ठियों को उठाने के लिए फिर डंडा बढ़ाया, साँप उस पर कूद पड़ा। ऐसा करने से लेखक और साँप के आसन बदल गए और लेखक चिट्ठियाँ उठाने में सफल हुए।

प्रश्न 6. इस पाठ को पढ़ने के बाद किन-किन बाल-सुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है ?

उत्तर: इस पाठ को पढ़ने के बाद अनेकों बाल-सुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है -

- पेड़ों से फल तोड़कर खाना ।
- स्कूल जाते समय रास्ते में शरारतें करना ।
- रास्ते में आए कुएँ, तालाब, पानी से भरे स्थलों पर पत्थर फेंकना, पानी में उछलना-कूदना ।
- जानवरों को तंग करके चलना ।
- अपने-आपको सबसे बहादुर समझना इत्यादि ।

प्रश्न 7. कुएँ में उतरकर चिट्ठियों को निकालने संबंधी साहसिक वर्णन को अपने शब्दों में लिखिए ।

उत्तर: भाई द्वारा दी गई चिट्ठियाँ लेखक से कुएँ में गिर गई थी और उन्हें उठाना भी जरूरी था । कुएँ में उतरकर चिट्ठियाँ लाना बड़ा ही साहस का कार्य था । कुएँ में साँप था, जिसके काटने का डर था । परंतु लेखक ने कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने का निर्णय लिया । उसने अपनी और अपने भाई की धोतियाँ कुछ रस्सी मिलाकर बाँधी और धोती की सहायता से वह कुएँ में उतरे । अभी वह 4-5 गज ऊपर ही थे कि साँप नीचे फन फैलाए हुए दिखाई दिया । उन्होंने सोचा धोती से लटककर साँप को मारा नहीं जा सकता और वहाँ डंडा चलाने के लिए पर्याप्त जगह भी नहीं थी । लेखक ने डंडे से चिट्ठियाँ सरकाने का प्रयत्न किया । साँप डंडे पर लिपट गया और उसका पिछला भाग लेखक के हाथ को छू गया । लेखक ने डंडा दूसरी ओर पटक दिया । जिससे लेखक और

साँप के आसन बदल गए और लेखक चिट्ठियाँ उठाने में सफल रहे । फिर हिम्मत करके लेखक ने कुएँ की मिट्टी साँप के एक ओर फेंकी, धीरे से दूसरी ओर से डंडा उठा लिया और चिट्ठियाँ लेकर कुएँ से बाहर आ गए ।

वास्तव में यह एक साहसिक कार्य था ।

प्रश्न 8. 'मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी - कभी कितनी मिथ्या और उल्टी निकलती हैं' - का आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर: इस कथन से लेखक यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि मनुष्य बुद्धजीवी प्राणी होने के नाते किसी भी कार्य को करने से पहले एक सशक्त योजना बनाता है, परंतु यह ज़रूरी नहीं है कि उसकी बनाई हर योजना सफल ही हो जाए । कभी - कभी तो उसकी योजनाएँ एकदम उल्टी एवं मिथ्या साबित हो जाती हैं । जिस प्रकार लेखक ने सोचा कि कुएँ से चिट्ठियाँ निकालना उनके बाएँ हाथ का खेल है । परंतु जब उन्होंने फन फैलाए फुँफकारते साँप को देखा तो उनकी पूर्व निर्धारित योजनाएँ और कल्पनाएँ धरी की धरी रह गई । अतः मनुष्य जैसा चाहता है, हमेशा वैसा नहीं होता है ।

कल्पना और वास्तविकता में हमेशा अंतर होता है ।

प्रश्न 9. 'फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है' - पाठ के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए ।

उ.9 - लेखक जब कुएँ में उतरे, तो वे यह सोचकर उतरे थे कि या तो वह चिट्ठियाँ उठाने में सफल होंगे या साँप द्वारा डँस लिए जाएँगे । फल की चिंता किए बिना वह कुएँ में उतर गए और अपने दृढ़ विश्वास के कारण सफल रहे ।

यह सत्य है कि जो लोग दृढ़ विश्वास और निश्चय के साथ कार्य करते हैं, उसका फल ईश्वर अर्थात् दूसरी शक्ति पर निर्भर होता है । गीता में भी यही संदेश दिया गया है - 'कर्म कर फल की चिंता मत कर ।'

अतः मनुष्य को कर्म करना चाहिए फल की चिंता नहीं करनी चाहिए ।
